डिप्लोमा इन आयुर्वेद फार्मेसिस्ट (द्वितीय वर्ष)

द्वितीय प्रश्न–पत्र

रूग्ण परिचर्या एवं व्यवहार हायुर्वेद

द्वितीय वर्ष

कुल अंक–100

रूग्ण परिचर्या–

1. परिचारक के गुण और कर्तव्य, परिचारक का व्यवहार, परिवारिक का परिधान, परिचारक का वैद्य, रोगी तथा रोगी के कुटुम्बियों के प्रति कर्तव्य।

2. रूग्णालय तथा उसमें प्रयुक्त होने वाली प्रत्येक वस्तु का शोधन, सक्रमण का प्रतिकार।

3. रूग्णालय में नवीन रोगियों के भर्ती के नियम, रोगियों से भेट करने के लिये दर्शकों के रूग्ण कक्ष में प्रवेश करने के नियम।

4. रोगी के शरीर की सफाई, निस्सहाय रोगियों को शैय्या में ही स्नान तथा प्रक्षोलन, मलपात्र एवं मूत्रपात का प्रयोग, रोगी के आराम तथा निद्रा की व्यवस्था।

5. शैय्या का तैयार करना, विभिन्न, प्रकार की शैय्यायें।

6. शैय्या ब्रण, शैय्या ब्रण के कारण, उनका प्रतिरोध तथा प्रतिकार।

7. रोगी की मापतौल, रोगी के शरीर का ताप लेना तथा नाड़ी व श्वांस क्रिया की सामान्य परीक्षा करना।

8. इंजेक्शन, इनाकुलेशन, वैक्सीनेशन आदि के सिद्धान्त, बर्फ की थैली, दस्ताना, मैकिटाश, स्फिग्मोगेनोमीटर, बेडक्रेडिल, एयरकुशन, रबररिंग, फडिमक टेबिल, सेक के विभिन्न उपकरण, रोगी शैय्या सम्बन्धी उपकरणों का ज्ञान, संक्रामक रोगों की विशिष्ट परिचर्या एवं परिचारक के लिए सावधानियां।

9. रोगी विवरण पत्र की पूर्ति, रोगी के विषय में रिपोर्ट लिखना, शरीर के ताप, श्वांस क्रिया, मलमूत्र, कफ, वमन, त्वचा तथा मानसिक अवस्थायें, चेष्टायें आदि का निरीक्षण करके रिपोर्ट बनाना।

10. मल–मूत्र तथा थूक को परीक्षा के लिए भेजने की विधि।

11. नासिका आदि अन्य भागों से रोगी को पोषण देना।

12. वस्ति एवं उत्तरवस्ति विधान, मूत्राशय, मलाशय, आदि समस्त मल भागों का शाधन, डूस तथा कैथीटर का प्रयोग।

13. वाष्प स्नान, स्वेदन क्रियायें, उपनाह और सेंक, गरम पानी की बोतल।

14. शरीर का तापक्रम कम करने के लिये शीतोपचार, हिम पुटिका (आइसकैप), हिम पुटक (आइस बैग) तथा हिम प्रलेप (आइस पुल्टिस) का प्रयोग।

15. औषधि प्रयोग, वाह्य प्रयोग, भुख द्वारा प्रयोग, श्वांस द्वारा प्रयोग, गुदा द्वारा प्रयोग, औषधि संरक्षण विधि, औषधि का निरीक्षण।

16. शोधनाशक प्रयोग, पुल्टिस, शुष्कस्वेद, वाष्पस्वेद, गिलास लगाना (कपिंग), अभ्यंग आदि।

17. अभ्यंग–मालिश करने की विधियां, शलय रोगियों की मालिश द्वारा चिकित्सा तथा शोध, अस्थि भग्न, संधि विशलेष आदि में एवं अन्य रूग्णावस्थाओं में मर्दन तथा व्यायाम आदि द्वारा चिकित्सा।

18. अनुपान तथा पथ्यापथ्य विधान–साबूदाना, जौ का पानी, अलसी की चाय, तुलसी व अदरख की चाय, शिकंजवीन दालयूष, चूने का पानी, चावल का माड़ आदि की प्रयोग विधि। रोगी पात्र, रोगी के भोजन की देखभाल।

19. रोग भेद से परिचर्या– भेद का विवरण।

20. रोगी की मृत्यु होने की सम्भावना में परिचारक के कर्तव्य। मृत्युतर शव प्रबन्ध।

व्यवहार आयुर्वेद–

1. स्थावर एवं जांगम विषों का सामान्य ज्ञान।

2. विभिन्न विषैली (Poious and Dangerous Drugs) औषधियों से सम्बन्धित अधिनियमों का ज्ञान।

प्राथमिक उपचार–

आकस्मिक अभिषात और उनका उपचार, अभिषातक बणों के प्राथमिक चिकित्सा, कुचल जाने और कुचले स्थान के नीला पड़ जाने के कारण रक्तश्रुति रोकने के उपाय, अग्निदग्ध, सूर्य रश्मिदग्ध, बर्फ से गले, शीत से ठिठुर जाने, मूर्छित होने या मस्तिष्क में गर्मी चढ़ जाने, पानी में डूबने, दम घुटने आदि में श्वास को परिचालित करने हेतु कृत्रिम श्वास विधि, अस्थिभंग, संधि भंग, मोच आदि का प्राथमिक उपचार आहत वाहिका (स्ट्रैचर) में रखकर आहत रोगी को चिकित्सा–गृह तक ले जाने की पद्धति का ज्ञान, आकस्मिक घटना सम्बन्धी वस्तुओं की तैयारी का ज्ञान। शरीर के विभिन्न भागों के लिए मुख्य पट्टियां।

णितोपासक के कर्तव्य –

(क) शुद्ध और निर्जन्तुक शास्त्र क्रिया के सिद्धान्त, जीवाणुओं का वर्गीकरण, शरीर में रोगोत्पादक जीवाणुओं का प्रवेश, जीवाणुओं को नष्ट करने की विधि, उघालना, वायु दबाव, विशुद्धिकरण निर्जन्तुकरण आदि प्रक्रियाओं का सम्यक् ज्ञान।

(ख) पूर्व कर्म–

1)शल्य भवन की व्यवस्था तथा देखरेख, शल्य सम्बन्धी पूर्व कर्म।

2) आतुरालय के उपकरण, उनके नाम और प्रयोग।

3) शल्य कर्म सम्बन्धी यंत्र, शस्त्रों के निर्जन्तुकरण एवं सुरक्षित रखने की विधि।

4) क्रियात्मक शल्य चिकित्सा के पूर्व सामान्य क्रियायें, हाथ और बांह का निर्जन्तुकरण, नखकुचिंका का निर्जन्तुकरण, दस्ताने, यंत्र–शस्त्र, बंधन, सूचिका का निर्जन्तुकरण या शुद्धिकरण।

5) शस्त्रकम के लिए रोगी की तैयारी, रोगी की त्वक् शुद्धि।

(ग) पट्टियां (वण्डेल) शरीर के विशेष भागों के लिए मुख्य पट्टियों, क्षेत्र और सामान्य अभिघातों की बंध क्रिया (ड्रेसिंग)।

(घ) संजाहार द्रव्यों का सामान्य ज्ञान एवं प्रयोग ज्ञान, प्रयुक्त होने वाली संज्ञाहार औषधियां, संज्ञानाश की अवस्थाएं, संज्ञानाश सम्बन्धी सावधानियों, संज्ञानाश के पश्चात् रोगी की देख रेख, क्लोरोफार्म और ईथर की प्रयोग विधि।

(1) कम्पाउन्डर के कर्तव्य एवं व्यवसाय में उत्तरदायित्व, चिकित्सक, रोगी, नर्स एवं जनसाधारण से उसके सम्बन्ध एवं कर्तव्य।

(2) औषधियों एवं चिकित्सा व्यवसाय के सम्बन्ध में राजकीय नियमोपनियों का विशिष्ट ज्ञान।

(3) व्यवहारयुर्वेद सम्बन्धी कार्यों में कम्पाउन्डरों का उत्तरदायित्व।

(4) परिवार नियोजन सम्बन्धी प्रमुख विधियों का परिचय एवं कम्पाउन्डर का उसमें योगदान।

(5) व्यवस्था पत्र प्राप्त करने, तद्नुसार योग तैयार करने एवं वितरण करने सम्बन्धी नियम।

(6) चिकित्सालय, निर्माणशाला आदि के विभिन्न विभागों की कार्य प्रणाली एवं प्रशासन का ज्ञान।

(7) चिकित्सा प्रमाण–पत्र सम्बन्धी विभिन्न नियमों का ज्ञान।

आलोच्य ग्रन्थ–

(1) रोग परिचर्या, श्रीकृष्ण औषधालय, कोलडा वोगला, अजमेर।

(2) नर्सिंग प्रोसीज्योर।

(3) प्राथमिक चिकित्सा–श्रण बन्ध–श्री शिवशर्मा

(4) अगद तंत्र एवं व्यवहार आयुर्वेद – श्री युगल किशोर गुप्त।